गीता लिम्बू

फूँक मारकर मेरे बालोंको बार बार बिखराते रहे,
फिर उंगलियों से बारबार सवाँरते रहे,
और मैं चुपचाप आँखें मूँदकर
तुम्हारे प्यारको महसूस करती रही ।
अचानक तुम्हारी उंगलियाँ रूक गईं।
मैने आँखें खोलकर देखा
तुम पास में नहीं हो।
हार पड़े तस्वीर में तुम मुस्कुरा रहे हो।
खिड़की से हवा का आवारा झोंका घुस आया
और फिर मेरे बालों से खेलने लगा।

आज जिन गुलों से गुलजार है गुलशन
कल मुर्झाएंगे,सूखेंगे,झड़ जाएंगे,
लेकिन जाते जाते उन्हे फक्र होगा कि
कभी उन्होने बेशुमार खुखियाँ बाटीं थीं,
गुलशन को गुलजार किया था
जबकि उन्हे वक्त बहुत कम मिला था ।

न ही धर्ती नीचे है
न ही सूरज,तारे उपर
शुन्य में लटक रहे हैं सब
नजर ही है जो
उपर नीचे देखती है।
न ही नस्ल अलग अलग है
न ही है अलग अलग जात
एक ही ईश्वर की संतानहैं सब,
नियत ही है जो
अलग अलग कर लेती है ।

मिट्टी का ढेड़ बनकर पड़ा था जीवन
कुम्हारने बड़े जतन से मुझे दीया बनाया।
आज धन्य हो गया मेरा जीवन
मेरे आश्रय में एक ज्योत जली
और तम को दूर किया
जिसमें मेरा भी सहयोग रहा ।

देखो उस सूरजको
चल पड़ा है जीवन यात्रा पर
आओ मेरी उंगली पकड़ लो
हम भी चलें उसी राह पर ।

करेंगे बेमिसाल कारनामे तेरी शान में,
आँच न लगने देंगे हम तेरी आन में,
लड़ेंगे,लड़ते रहेंगे
तेरी आन की खातिर ऐ तिरंगा
जान चली जाय अगर लड़ते लड़ते
लिपटा लेना अपने दामन में ।

खुद को सवाँरने में हम
इतने मशरूफ हो गए थे
पता ही न चला
पास बैठे दोस्त
कब उठकर चले गए थे ।

शिलांग

ISSN:2583-8849